

११. अद्भुत वीर

- रामधारी सिंह 'दिनकर'

'युग की अवहेलना शूरमा कब तक सह सकता है', इस पंक्ति का विस्तार कीजिए।

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- विद्यार्थियों से भारतीय शहीद जवानों के नाम पूछिए।
- घटनास्थल के बारे में कहलवाएँ।
- घटित घटना के बारे में कहने के लिए प्रेरित करें।
- विद्यार्थियों को इन घटनाओं से प्राप्त प्रेरणा बताने के लिए कहें।

कल्पना पल्लवन

'जय हो' जग में जहाँ भी, नमन पुनीत अनल को,
जिस नर में भी बसे, हमारा नमन तेज को, बल को।
किसी वृंत पर, खिले विपिन में, पर नमस्य है फूल,
सुधी खोजते नहीं गुणों का आदि, शक्ति का मूल।

ऊँच-नीच का भेद न माने, वही श्रेष्ठ ज्ञानी है,
दया-धर्म जिसमें हो, सबसे वही पूज्य प्राणी है।
क्षत्रिय वही, भरी हो जिसमें निर्भयता की आग,
सबसे श्रेष्ठ वही ब्राह्मण है, हो जिसमें तप-त्याग।

तेजस्वी सम्मान खोजते, नहीं गोत्र बतलाके,
पाते है जग से प्रशस्ति अपना करतब दिखलाके।
हीन मूल की ओर देख जग गलत कहे या ठीक,
वीर खींचकर ही रहते हैं इतिहासों में लीक।

जिसके पिता सूर्य थे, माता कुंती सती कुमारी,
उसका पलना हुई धार पर बहती हुई पिटारी।
सूत वंश में पला, चखा भी नहीं जननि का क्षीर,
निकला कर्ण सभी युवकों में तब भी अद्भुत वीर।

तन से समरशूर, मन से भावुक, स्वभाव से दानी,
जाति-गोत्र का नहीं, शील का, पौरुष का अभिमानी।
ज्ञान-ध्यान, शस्त्रास्त्र का कर सम्यक अभ्यास,
अपने गुण का किया कर्ण ने आप स्वयं सुविकास।

परिचय

जन्म : २३ सितंबर १९०८ सिमरिया, मुंगेर (बिहार) **मृत्यु** : २४ अप्रैल १९७४ चेन्नई (तमिळनाडु)

परिचय : रामधारी सिंह 'दिनकर' जी अपने युग के प्रखरतम कवि के साथ-साथ सफल और प्रभावशाली गद्य लेखक भी थे। आपने निबंध के अतिरिक्त डायरी, संस्मरण, दर्शन व ऐतिहासिक तथ्यों के विवेचन भी लिखे हैं।

प्रमुख कृतियाँ : कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी (खंड काव्य) टेसू राजा अड़े-अड़े (बालसाहित्य) परशुराम की प्रतीक्षा, रेणुका, नील कुसुम आदि (काव्य संग्रह), संस्कृति के चार अध्याय, चेतना की शिखा, रेती के फूल आदि (निबंध), वट पीपल (संस्मरण), देश-विदेश, मेरी यात्राएँ (यात्रा वर्णन), आत्मा की आँखें (अनुवाद)।

पद्य संबंधी

खंडकाव्य : हिंदी साहित्य में यह प्रबंध काव्य का रूप है। मानव जीवन की किसी विशेष घटना को लेकर लिखा गया काव्य 'खंडकाव्य' होता है। इसमें केवल प्रमुख कथा होती है। प्रासंगिक कथाओं को इसमें स्थान नहीं मिल पाता है। कम से कम आठ सर्गों के प्रबंध काव्य को खंडकाव्य माना जाता है।

प्रस्तुत काव्यांश 'रश्मिरथी' खंडकाव्य से लिया गया है। इसमें कवि ने कर्ण के बहाने तेज को नमन, समाज में समानता, कुलीनता छोड़कर योग्यता, कर्मठता को प्रधानता देने की प्रेरणा दी है।

अलग नगर के कोलाहल से, अलग पुरी-पुरजन से,
कठिन साधना में उद्योगी लगा हुआ तन-मन से ।
निज समाधि में निरत, सदा निज कर्मठता में चूर,
वन्य कुसुम-सा खिला कर्ण जग की आँखों से दूर ।
नहीं फूलते कुसुम मात्र राजाओं के उपवन में,
अमित बार खिलते वे पुर से दूर कुंज कानन में ।
समझे कौन रहस्य ? प्रकृति का बड़ा अनोखा हाल
गुदड़ी में रखती चुन-चुन कर बड़े कीमती लाल ।
जलद-पटल में छिपा, किंतु रवि कबतक रह सकता है ?
युग की अवहेलना शूरमा कबतक सह सकता है ?
पाकर समय एक दिन आखिर उठी जवानी जाग,
फूट पड़ी सबके समक्ष पौरुष की पहली आग ।

रंग-भूमि में अर्जुन था जब समाँ अनोखा बाँधे,
बढ़ा भीड़ भीतर से सहसा कर्ण शरासन साधे ।
कहता हुआ, “तालियों से क्या रहा गर्व में फूल ?
अर्जुन ! तेरा सुयश अभी क्षण में होता है धूल ।

—०— (‘रश्मिरथी’ से)

शब्द संसार

पुनीत (पुं.सं.) = पवित्र

अनल (पुं.सं.) = अग्नि

करतब (पुं.सं.) = कर्तव्य

वंत (पु.सं.) = वह पतला डंठल जिस
पर फूल लगा रहता है ।

विपिन (पुं.सं.) = जंगल

क्षीर (पुं.सं.) = दूध

शरासन (पुं.सं.) = धनुष

शूरमा (पुं.सं.) = वीर



‘मैं लाल किला बोल रहा हूँ...’
निबंध लिखिए ।

श्रवणीय

‘दानवीर कर्ण’ के बारे में
कहानी सुनिए - महत्त्वपूर्ण
अंश सुनाइए ।

आसपास

भारत के महत्त्वपूर्ण दस
ऐतिहासिक स्थलों से संबंधित
जानकारी अंतरजाल से प्राप्त कर
हस्तलिखित पत्रिका बनाइए ।



किसी शहीद जवान के शौर्य
संबंधी घटना का वर्णन कीजिए ।

विषय से...

दूध से दही बनने की प्रक्रिया पढ़िए
और वैज्ञानिक कारण बताइए ।

नौवीं कक्षा, पृष्ठ ८८, विज्ञान और
प्रौद्योगिकी,



हमारे देश की राजधानी दिल्ली में मनाए जाने वाले गणतंत्र दिवस समारोह का वर्णन समाचारपत्र से पढ़िए ।

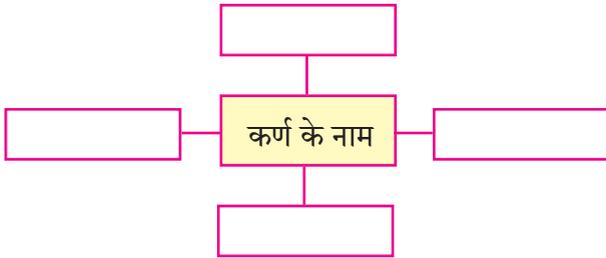


‘हमारे देश की ऐतिहासिक वास्तुएँ हमारी धरोहर हैं ।’ इनकी सुरक्षा हेतु उपायों की सूची बनाइए ।

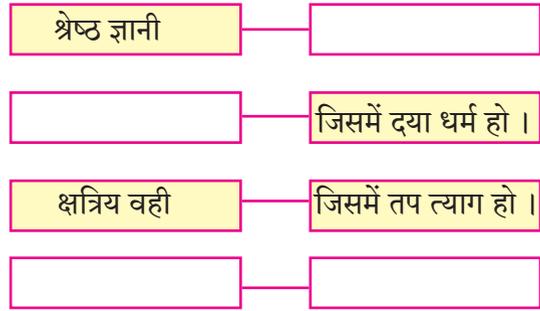


(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

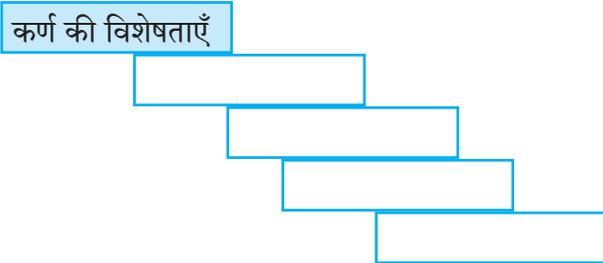
(क) संजाल पूर्ण कीजिए :



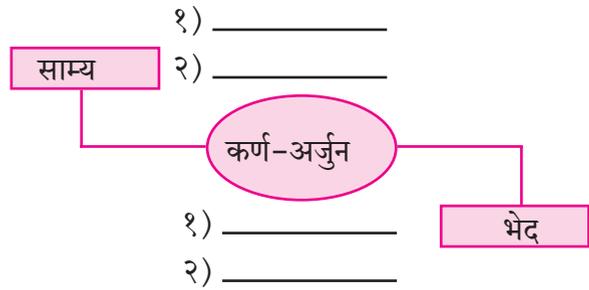
(ग) आकृति पूर्ण कीजिए :



(ख) प्रवाह तख्ता पूर्ण कीजिए :



(घ) साम्य-भेद लिखिए :



(च) भिन्नार्थक शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

(छ) तुकांत शब्द लिखिए ।

(२) “चखा भी नहीं जननि का क्षीर” काव्य पंक्ति से कर्म की विशेषता स्पष्ट कीजिए ।

(३) कविता में प्रयुक्त विरामचिह्नों के नाम लिखकर उनका अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए ।



.....

.....

.....